हम हमारे जीवन की प्रत्येक अवस्था में भिन्न भिन्न ऋतुओं को अनुभव करते हैं। हमारे जीवन की कुछ अद्भुत ऋतुओं के मध्य, हो सकता है कि हमें ऐसे समयों से होकर गुज़रना पड़े जिन्हें हम “रात्रि काल” कह सकते हैं। जब हम “रात्रि काल की ऋतुओं” को समझने का प्रयास करते हैं, तब हम जानते हैं कि हमें कई सवालों के जवाब चाहिए – रात्रि काल क्यों आता है? यह कैसे होता है? रात क्यों आती है? मैं अन्धकार में क्या करता हूं? सुबह कब होगी?

यह पुस्तक इन प्रश्नों के उत्तर देती है और हमें प्रोत्साहित करती है कि उस आशा के कारण जो हमने मसीह में पाई है, हम मुश्किल परिस्थितियों के मध्य सही रवैय्या बनाए रखें। दुख रात में बना रह सकता है, परंतु सुबह आनंद होगा!

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org

जीवन
रात्रि
का
काल
रात्रि
काल

आशीष रायचूर

केवल विनामूल्य वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च अँड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा मुद्रित और वितरित।
प्रथम संस्करण मुद्रितः जून 2020

सम्पर्क

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA
Phone: +91-80-25452617
Email: bookrequest@apcwo.org
Website: **apcwo.org**

अन्यथा सूचित न हो तो, सभी पवित्र शास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबल, बाइबल सोसायटी इंडिया संस्करण से लिया जाता है। सर्व हक्क स्वाधीन।
बाइबल परिभाषाएं, इब्रानी और ग्रीक शब्द तथा उनके अर्थ निम्नलिखित स्रोतों से लिए गए हैं :

Thayer's Greek Definitions. Published in 1886, 1889; public domain.
Strong's Hebrew and Greek Dictionaries, Strong's Exhaustive Concordance by James Strong, T.D., LL.D. Published in 1890; public domain.
Vine's Complete Expository Dictionary of Old and New Testament Words, © 1984, 1996, Thomas Nelson, Inc., Nashville, TN.

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस विनामूल्य प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के विनामूल्य प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

डाक सूची

यदि आप हमारी नई पुस्तके पाने के लिए अपना नाम हमारी डाक सूची में चाहते हैं, तो कृपया ईमेल द्वारा अपना सही पता हमें भेजें : **contact@apcwo.org**

भारत में विनामूल्य बल्क ऑर्डर

आपकी स्थानीय कलीसिया में, बायबल अध्ययन समूह, बाइबल कॉलेज, सेमिनारों, सभाओं, पुस्तकालयों, व्यापार केन्द्रों में वितरण हेतू हम आनंद के साथ हमारी पुस्तकें विनामूल्य भेजना चाहते हैं। कृपया ईमेल द्वारा पुस्तकों की संख्या और पाने वालों के पते भेजें : bookrequest@apcwo.org

(Hindi book - The Night Seasons of Life))

ऑल पीपल्स चर्च
बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी–बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं – सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

एपीसी–बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

Theology and Christian Ministry (C.Th.) में एक वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
Theology and Christian Ministry (Dip.Th.) में दो वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
Bachelor in Theology and Christian Ministry (B.Th.) में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

हर सप्ताह के दिन, सोमवार से शुक्रवार तक सुबह 9 से दोपहर 1 बजे तक कक्षाएं ली जाती हैं, विद्यार्थी, नौकरीपेशा लोग, और गृहिणियां सभी इन कक्षाओं में भाग ले सकते हैं और 1 बजे के बाद अपने काम पर जा सकते हैं। वहीं रहने की इच्छा रखने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग–अलग हॉस्टेल सुविधाएं हैं। विद्यार्थी हर सप्ताह दो से पांच बजे तक क्षेत्रीय कार्य, विशेष सेमिनारों में, दोपहर के समय में प्रार्थना और आराधना में समय व्यतीत करते हैं। दोपहर की सभाएं घर से आने वाले विद्यार्थियों के लिए वैकल्पिक हैं। सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया जाता है कि वे सप्ताह के अंत में एक या उससे अधिक स्थानीय कलीसियाओं में सेवा करें।

कॉलेज, विभिन्न कार्यक्रमों, पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी के लिए, और आवेदन पत्र डाऊनलोड करने के लिए कृपया इस साईट को भेंट दें : apcwo.org/biblecollege

एपीसी–बीसी को द नैशनल एसोसिएशन फॉर थियोलॉजिकल एक्रेडिटेशन (नाटा) द्वारा मान्यता प्राप्त है।

जीवन का रात्रि काल

विषयसूची

1. जीवन की ऋतुएं

2. जीवन का रात्रि काल

3. रात कहां से आती है

3. रात क्यों आती है

5. जब सब अंधकारमय होता है तब परमेश्वर कहा होता है?

5. हम बीच रात में क्या करते हैं

7. मेरी सुबह का कब उदय होगा?

1

जीवन की ऋतुएं

जीवन एक सफर है – ऐसा सफर जिसकी कई अवस्थाएं हैं! हम सभी जो एक समय शिशु थे, बड़े होकर बच्चे बन गए और बाद में किशोरावस्था के वर्षों में आ गए जो प्रायः अंतहीन लगते थे! उसके बाद प्रौढ़ अवस्था आई। हम में से कई अब विवाहित हैं और हमारे बच्चे हैं। ये बच्चे बढ़े हो जाएंगे, घर छोड़कर चले जाएंगे और हम जीवन की दूसरी अवस्थाओं की ओर आगे बढ़ेंगे। परंतु, जीवन की प्रत्येक अवस्था में, विभिन्न ऋतुएं हैं। जब हम अपने बचपन के वर्षों की याद करते हैं, तो हम में से अधिकतर लोगों के पास बड़े मौज–मस्ती वाले क्षणों की और आइस्क्रीम की सुखमय यादें हैं! कुछ लोगों के लिए, हमारे बचपन का विचार, हमारे होठों पर आह ला सकता है, क्योंकि वह संघर्ष और अभाव से भरपूर जीवन होगा।

जीवन की ऋतुएं

हमें यह जानना है कि परमेश्वर ने जीवन की योजना ऐसे बनाई है कि उसकी ऋतुएं होती हैं। हम जीवन में विभिन्न ऋतुओं से होकर गुज़रते हैं। हमारे जीवन की ऋतुएं बदलती रहती हैं। सभोपदेशक की पुस्तक हू–ब–हू वर्णन करती है।

"हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है" (सभोपदेशक 3:1)।

"उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुंदर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादी–अनंत काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता" (सभोपदेशक 3:11)।

हमें यह समझना है कि परमेश्वर मनमाने ढ़ग से काम नहीं करता। वह किसी कार्य को स्वेच्छाचारी रूप से पूरा करने का अचानक निर्णय नहीं लेता। परमेश्वर 'समयों' और 'ऋतुओं' के अनुसार कार्य करता है। जब यीशु स्वर्ग पर चढ़ने वाला था, तब उसके चेले जानना चाहते थे कि क्या उस समय इस्राएल राज्य पुर्नस्थापित किया जाएगा। "इसलिए उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या आप इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देंगे?" उसने उनसे कहा, "उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं" (प्रेरितों के काम 1:6,7)। पिता ने समयों और ऋतुओं को अपने अधिकार में रखा है।

'क्रोनोस' और 'कैरोस'

दो ग्रीक शब्द हैं जो समयों को दर्शाते हैं। एक शब्द है 'क्रोनोस' जो 'अवधि' या 'कैलेंडर समय' का उल्लेख करता है और दूसरा शब्द है 'कैरोस' जो 'सही समय,' 'उपयुक्त क्षण' या 'निर्धारित समय' का उल्लेख करता है। परमेश्वर के हाथों में समय की अवधि (क्रोनोस) और सही समय (कैरोस) है।

पवित्र शास्त्र में इसे समुचित रूप से समझाया गया है। "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ" (गलातियों 4:4)। जब समय पूरा (क्रोनोस) हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को मनुष्य के साथ खुद का मेल करने के लिए भेजा। क्रोनोस के पूरा होने के बाद कैरोस आता है। जब 'समय की अवधि' पूरी होती है, तब 'उपयुक्त समय' आता है। 'समय की पूर्णता' में, परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। परमेश्वर इसी रीति से काम करता है। पृथ्वी पर जीवन की ऋतुओं में परमेश्वर सहभागी होता है। परमेश्वर ही है जो पृथ्वी पर मनुष्यों के मामलों में समयों और ऋतुओं को बदलता है।

परमेश्वर समयों और ऋतुओं को बदलता है

"समयों और ऋतुओं को वह पलटता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ भी वही देता है" (दानिय्येल 2:21)।

परमेश्वर पृथ्वी पर समयों और ऋतुओं को नियंत्रित करता है और प्रभावित करता है। विश्वासी होने के नाते, हमें यह यकीन है कि हमारे जीवन के समय और ऋतु उसके हाथों में है। हमें यह अद्‌भुत भरोसा और आशा है। "मेरे दिन तेरे हाथ में है; तू मुझे मेरे शत्रुओं और मेरे सतानेवालों के हाथ से छुड़ा" (भजनसंहिता 31:15)। भजनसंहिता 31:15 में, 'समय' के लिए उपयोग किया गया इब्रानी शब्द हमारे जीवन के 'अब' और 'कब' का उल्लेख करता है। हमारे जीवनों के 'अब' और 'कब' परमेश्वर के हाथों में हैं। जैसा उसे उचित लगता है उसके अनुसार वह उनके बदलावों को आयोजित करता है। हम में से कुछ लोग अनुचित रूप से चिंतित होंगे कि हमें सही नौकरी कब मिलेगी या क्या सही व्यक्ति के साथ हमारा विवाह होगा। हमें इस आश्वासन में निर्भर रहना है कि हमारे जीवनों के 'कब' उसके हाथों में है। जीवन की ऋतुओं को जानने और समझने के लिए बुद्धि की ज़रूरत होती है। हमें उनके बदलावों के प्रति संवेदनशील रहने की ज़रूरत है और उचित रीति से प्रतिक्रिया व्यक्त करना है। "जो आज्ञा को मानता है, वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है" (सभोपदेशक 8:5)।

प्रत्येक कार्य करने के लिए उचित समय है और उसके लिए सही विवेक की आवश्यकता है। बुद्धिमान व्यक्ति है जिसके पास यह पहचानने की योग्यता होती है कि उसे क्या करना चाहिए और कब करना चाहिए। 1 इतिहास 12:32 इस्साकार के पुत्रों के विषयों में कहता है जिन्हें समय की समझ थी, कि इस्राएल राष्ट्र को क्या करने की ज़रूरत है। जब हम कहते हैं कि फलाने व्यक्ति के पास समयों और ऋतुओं की समझ है, तो हम बताना चाहते हैं कि वह व्यक्ति जानता

है कि समय के उस क्षण में क्या करना चाहिए। जीवन की प्रत्येक ऋतु में कुछ विशिष्ट बात करने की ज़रूरत होती है। यदि हम खुद को कठिन हालात में पाते हैं और सोचते हैं कि हमें क्या करना चाहिए, तो यह बुद्धिमानी इसमें होगी कि हम रुक जाएं और मूल्यांकन करें कि हम जीवन की कौनसी ऋतु में हैं। उदाहरण के तौर पर, जो व्यक्ति दसवीं कक्षा में है उसके लिए विवाह का विचार करना भी मूर्खतापूर्ण होगा। विवाह अच्छी बात है, परंतु दसवीं कक्षा के लड़के के लिए, यह 'समय से बाहर' की बात है और ऐसा करना गलत है। हमारे जीवन की प्रत्येक ऋतु में हमें कुछ निश्चित कार्य करना है। प्रत्येक ऋतु का एक कारण है, उसमें विशिष्ट कामों को पूरा करने की ज़रूरत है। आप जीवन की जिस ऋतु में हैं उसे समझें और उस ऋतु में जो करने की ज़रूरत है उसे पूरा करें।

हमारे जीवनों में 'अब' और 'कब' – हमारे जीवन की ऋतुएं – उसके हाथों में हैं।

2

जीवन का रात्रि काल

रात्रि काल की विशेषताएं

हम सभी जीवन की विभिन्न ऋतुओं से होकर गुजरते हैं। हम जीवन की कुछ अद्‌भुत ऋतुओं को अनुभव करते हैं, उसी तरह हम ऐसे समयों से होकर गुजरते हैं जो खास अद्‌भुत नहीं होते। हम उन समयों को हमारे जीवन का 'रात्रि काल' कह सकते हैं। हम सभी 'दिन' और 'रात' से होकर गुज़रते हैं। यहां पर कुछ विशेषताएं हैं जो रात्रि काल का वर्णन करती हैं।

अंधकार

जीवन का रात्रि काल ऐसी ऋतु है जिसे कम देखा जा सकता है। आगे का रास्ता अंधकारमय और सुना होता है। हाल ही के समय तक, रास्ता उजियाले से भरा और साफ रहा होगा। परंतु अचानक सब कुछ अंधियारा हो गया। परिस्थिति आशारहित और भविष्य असुखकर प्रतीत होने लगा। आगे क्या करना चाहिए यह निर्णय ले पाने में हम असमर्थ हैं।

निःशब्दता

सब कुछ शांत, हलचलरहित और निःशब्द प्रतीत होता है। कुछ भी होते दिखाई नहीं देता। हमारी सारी प्रार्थनाओं के बावजूद और परमेश्वर की खोज करने के बावजूद, कुछ भी होते दिखाई नहीं देता। हमारी सारी प्रार्थनाएं अनुत्तरित प्रतीत होती हैं। कुछ हासिल करने के हमारे सारे प्रयास, व्यर्थ दिखाई देते हैं। हम ऐसे स्थान पर आ चुके हैं जहां हम सवाल करने लगे हैं कि हमारी परिस्थितियों पर हमने परमेश्वर का वचन कहा, परंतु क्या हमारा विश्वास सचमुच कार्य करता है। हम परमेश्वर की उपस्थिति पर भी सवाल कर सकते हैं क्योंकि सारी बातों

में एक ठहराव आता प्रतीत होता है और कामों में लम्बा विलम्ब हो रहा है।

अकेलापन

अकेलापन निरंतर हमारा साथी होता है। ऐसा लगता है कि कोई हमारी परवाह नहीं करता। कोई समझ नहीं पाता कि हम वास्तव में किस दौर से गुजर रहे हैं। जीवन इतना अकेलेपन से भरा होता है कि हम सोचने लगते हैं कि क्या हमारे साथ हमेशा रहने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा वास्तव में सच है। परमेश्वर लाखों मील दूर प्रतीत होता है।

दिल में हलचल

रात्रि काल बड़ी खोज और प्रश्नों का समय होता है। हमारे मनों में कई प्रश्न या सवाल होते हैं जो हमें परेशान करते हैं, जिनका हम उत्तर खोजते हैं। हमारे सामने इस प्रकार के सवाल हो सकते हैं, "मुझे तरक्की कब मिलेगी?" "शादी के लिए मुझे कब तक इंतज़ार करना होगा?" "विवाह के लिए मुझे सही व्यक्ति कब मिलेगा?" कई प्रकार के प्रश्न, खोज और खलबली शुरू रहती है।

अस्पष्टता

रात्रि काल की विशेषता अस्पष्टता है। हमारे पास बड़ी प्रतिभाएं, कौशल और योग्यताएं हो सकती हैं, परंतु इस समय कई लोग उन्हें पहचान नहीं सकते। ऐसा लगता है कि हम लोगों से छिपे हुए हैं। कोई हमें नहीं जानता।

मूसा के उदाहरण पर विचार करें। उसे इस्राएली लोगों का अगुवा बनने के लिए बुलाया गया था, परंतु वह जंगल में भेड़ चरा रहा था। दूसरा उदाहरण दाऊद का है। उसे इस्राएल का राजा बनने के लिए बुलाया गया था, परंतु वह भी जंगल में भेड़ चरा रहा था। यूसुफ कैद में पड़ा था। बपतिस्मा करनेवाले यूहन्ना को मसीह के अग्रदूत के रूप में बुलाया गया था, परंतु वह जंगल में टिड्डियां और शहद खा रहा था।

कोई यह जानता न था कि वह यहां है। परंतु, यूहन्ना बपतिस्मा करनेवाले ने एक बार भी जंगल में परमेश्वर की उपस्थिति पर सवाल नहीं किया, यद्यपि उसे यीशु का अग्रदूत होना था। पौलुस ने जिसे महान प्रेरित के रूप में बुलाया गया था, गुमनामी में 13 वर्ष बिता दिए।

3

रात कहां से आती है

रात की ऋतुओं को समझने का प्रयास करते समय, हम जानते हैं कि हमें कई प्रश्नों के उत्तरों की ज़रूरत है। रात का समय किस कारण आता है? यह कब और कैसे होता है? जब मैं मेरे जीवन पर और रात के समयों पर विचार करता हूं जिन्हें मैंने सहा है, तो मैं कम–से–कम चार कारणों की ओर निर्देश कर सकता हूं कि रात का समय या ऋतुएं क्यों आती है।

परमेश्वर ऐसे समयों में हमारे मार्ग को दिशा देता है

हम में से कुछ लोग रात की ऋतु में इसलिए होंगे क्योंकि परमेश्वर ने उसमें उनकी अगुवाई की। हो सकता है कि उसमें उसका कुछ उद्देश्य हो। बायबल बताती है कि भले मनुष्य के कदम यहोवा की ओर से निश्चित किए जाते हैं (भजनसंहिता 37:23)। यूहन्ना बपतिस्मा करनेवाले के उदाहरण पर विचार करें जिसके विषय में इस पुस्तक में पहले चर्चा की गई है। यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने, जिसे यीशु का अग्रदूत होने के लिए बुलाया गया था, अपने जीवन के कई वर्ष जंगल में बिता दिए और कोई नहीं जानता था कि क्या हुआ। उसने वह समय तब तक जंगल में बिताया जब तक कि उसके प्रकट होने का समय नहीं आया (लूक 1:80)। मानो प्रभु यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले से कह रहा था, "जब तक मेरा समय नहीं आता, तब तक तेरे लिए मेरा स्थान जंगल में है।" यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने परमेश्वर की बुद्धि पर कोई सवाल किया इस विषय में कहीं नहीं लिखा गया है।

प्रेरित पौलुस के उदाहरण पर विचार करें जो यरूशलेम से दमिश्क की ओर जा रहा था। उसने एक तेज़ ज्योति देखी, और प्रभु यीशु के साथ उसकी मुलाकात हो गई। परमेश्वर ने उसे बचाया। उसके जीवन पर

परमेश्वर की बुलाहट प्रेरित के रूप में थी। उसके बाद, वह दमिश्क को गया, उसने दृष्टि पाई और मसीह के विषय में प्रचार करने लगा (प्रेरितों के काम 9:19–25)। उसका जीवन खतरे में था और वह तीन वर्षों तक अरेबिया के जंगल में भागता फिरा (गलातियों 1:18)। बाद में, वह यरूशलेम को आया, सभी प्रेरितों से मिला और उसके द्वारा प्राप्त किए गए अद्‌भुत प्रकाशनों के विषय में उसने उनसे बातें की। एक बार फिर उसका जीवन खतरे में था और वह फिर भागता फिरा – परंतु इस समय केवल 13 वर्षों के समय के लिए। उस समय के दौरान उसके जीवन में जो निश्चित घटनाएं घटित हुईं, उनके विषय में कोई नहीं जानता। हम केवल इतना जानते हैं कि जिसने पहले मसीहियों को सताया था वह बाद में मसीह का प्रचार कर रहा था (गलातियों 1:21–24)। तेरह वर्षों तक, पौलुस सीरिया और किलिकिया में था जिसके बाद वह तरसुस को आया। बरनबास अंताकिया से आया और उसने उसे खोज निकाला। बरनबास उसे वापस अंताकिया ले गया और वहां से, एक वर्ष तक, पौलुस वचन सीखा रहा था (प्रेरितों के काम 11:25,26)। बाद में, उसे मिशनरी के रूप में भेजा गया और प्रेरित की सेवकाई में नियुक्त किया गया (प्रेरितों के काम 13:2–4)। इसलिए, दमिश्क के मार्ग पर प्रभु यीशु से उसकी मुलाकात के समय से प्रेरित की सेवकाई में उसकी नियुक्ति तक – करीब 17 वर्षों का समय – पौलुस ने क्या किया इसके विषय में शायद ही कहीं लिखा गया है। अर्थात्, हम जानते हैं कि वह प्रचार कर रहा होगा और प्रभु की सेवा कर रहा होगा। फिर भी, प्रभु को यह इतना महत्वपूर्ण नहीं लगा कि उसे हमारे लिए लिखें। पौलुस के इन वर्षों को अक्सर 'मौन वर्ष' कहा जाता है।

हम में से कुछ लोग हमारा उद्धार होने के तुरंत बाद मुख्य सेवकाई में जुड़ जाना चाहते हैं, परमेश्वर के कार्य का हमें एहसास नहीं होता। अर्थात् परमेश्वर हमारी इच्छा और उसके लिए कार्य करने हेतु हमारे मन में जो उत्साह होता है उसका आदर करता है, परंतु, कभी–कभी, हम यह समझने की गलती करते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं! प्रेरित

पौलुस ने भी, वह व्यक्ति जिसे नए नियम का दो तिहाई भाग लिखने के लिए बुलाया गया था और जिसने बहुत प्रकाशन पाया था, 17 वर्ष गुमनामी में बिता दिए। परंतु, उन समयों के दौरान उसने प्रकाशन प्राप्त किया।

हम अपने ही कामों/निर्णयों/चुनावों के परिणामस्वरूप ठोकर खाते हैं

कभी–कभी, हम हमारे द्वारा किए गए निर्णयों के कारण खुद को रात की ऋतु में पाते हैं। उदाहरण के तौर पर, किसी विद्यार्थी ने अध्ययन छोड़कर अन्य बातों में समय बिताया होगा और उसकी परीक्षाओं में वह असफल रह जाता है। यह विद्यार्थी के जीवन में रात की ऋतु का उत्तम उदाहरण होगा। परिणामस्वरूप, उसे नौकरी ढूढ़ने में और किसी विशिष्ट दिशा में उन्नति करने में मुश्किल हो सकती है। इस विद्यार्थी के लिए परमेश्वर को यह सवाल करना अनुचित होगा कि वह उसके जीवन में इस दौर से क्यों गुजर रहा है। हमें यह अनुमान नहीं लगाना है कि परमेश्वर ने इसे होने की 'अनुमति' दी है, क्योंकि यह पूर्णतया उस व्यक्ति का किया–धरा था। विद्यार्थी को अध्ययन करना था और अपनी परीक्षा में सफलता पाना था। यदि वह ऐसा करता, तो उसका जीवन पूर्ण रूप से भिन्न होता। ऐसी बातों के लिए हम परमेश्वर को दोष नहीं दे सकते। परमेश्वर ने हमें स्वतंत्र इच्छा दी है और यदि हम बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय नहीं लेते, तो हमारे जीवन में मुश्किल समय में पड़ने से हमें रोकने के लिए परमेश्वर हम पर अपनी इच्छा नहीं लादेगा।

पवित्र शास्त्र से दूसरे उदाहरण पर विचार करें। मूसा जानता था कि उसे उसके लोगों के छुड़ाने वाले के रूप में बुलाया गया है। परंतु उसने यह मानने की गलती की कि उसके लोग सर्व–सम्मति से उसे अपने अगुवे के रूप में स्वीकार कर लेंगे। वह इस आत्म–आश्वासन के साथ आगे बढ़ा कि जो प्रशिक्षण उसने मिस्र देश में पाया था उससे वह सुसज्जित है। उसने एक इब्रानी और मिस्री व्यक्ति को लड़ते देखा,

उसने इब्रानी व्यक्ति की रक्षा करने का प्रयास किया और मिस्री व्यक्ति की हत्या कर बैठा। दूसरी मुठभेड़ में, उसने दो इब्रानियों को लड़ते देखा और जब उसने दखल देने की कोशिश की, तब उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसकी दशा भी उस मिस्री व्यक्ति के समान होगी। मूसा डर के मारे वहां से भाग निकला और उसे चालीस वर्षों तक जंगल में रहना पड़ा। अब सवाल उठता है कि क्या परमेश्वर ने उन चालीस वर्षों की योजना बनाई थी। इसका उत्तर है, "नहीं।" मूसा ने खुद को जंगल में उसी के द्वारा की गई गलतियों के कारण पाया। उसने परमेश्वर की मूल योजनाओं से बाहर कदम निकाला था। उसने अपने ही तरीके से काम करने की कोशिश की थी। वह इस सत्य को जानता था कि उसे छुड़ाने वाला होने के लिए बुलाया गया है, परंतु परमेश्वर के समय का और कार्य पद्धति का इंतज़ार करने हेतु उसके पास धीरज नहीं था। उसने अपने ही तरीके से कामों को करने की कोशिश की और चालीस वर्ष जंगल में बिता दिए (प्रेरितों के काम 7:20–30)। परमेश्वर को तब तक इंतज़ार करना पड़ा जब तक कि मूसा की हत्या करने की इच्छा रखने वाले लोगों की मृत्यु नहीं हुई (निर्गमन 2:15,23)।

इस्राएलियों के विषय में साचें जिन्हें परमेश्वर कनान देश की सीमा पर ले आया था जहां पर वह चाहता था कि वे रहें। इस्राएलियों से यह करना अपेक्षित था कि वे बारह लोगों को उस देश का भेद लेने भेजें और उस पर अधिकार स्थापित करने की रणनीति तैयार करें। उनमें से दस अविश्वास का बुरा समाचार लेकर वापस लौट आए। वे कनान के लोगों से डर गए थे और उन्होंने परमेश्वर पर अविश्वास करने का चुनाव किया, जिनसे उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि वे उस देश को मिरास के रूप में पाएंगे। वे वापस मिसर देश जाना चाहते थे। यह पढ़ने से दुख होता है कि परमेश्वर ने किस प्रकार उनके अविश्वास और कुड़कुड़ाहट के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। "अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहते हैं, सो कल तुम घूमकर प्रस्थान करो, और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल में जाओ" (गिनती 14:25)।

परमेश्वर ने उनसे कहा कि वे वापस जंगल जाएं, वे वहां चालीस वर्ष तक रहें और जितने लोगों ने अविश्वास किया था उनमें से किसी को भी वाचा के देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई। फिर से, हम सोच सकते हैं कि क्या यह परमेश्वर की योजना थी कि वे चालीस वर्षों तक जंगल में रहें। उत्तर फिर से है, "नहीं।" उनके द्वारा किए गए कुछ चुनावों की वजह से वे वहां थे, ये चुनाव परमेश्वर के निर्देशों के विपरीत थे। परंतु, यह देखकर तसल्ली मिलती है कि परमेश्वर निरंतर उनके साथ – उनका मार्गदर्शन कर रहा था, उनकी रक्षा कर रहा था और उन्हें सात्वंना दे रहा था। यह सच था कि जिस तरह सब कुछ उनके लिए बदल गया था उससे परमेश्वर प्रसन्न नहीं था। परमेश्वर उनके लिए कनान देश चाहता था, जिस पर अधिकार किया जा सकता था, परंतु जो स्थान उनके लिए परमेश्वर की योजना नहीं थी वहां पर उन्हें लम्बा समय बिताना पड़ा। जब हम ऐसे निर्णय लेते हैं जो हमें उस दिशा में ले जाते हैं जो हमारे लिए परमेश्वर की मूल योजना नहीं है, तो जब हम परमेश्वर की सुनते हैं, तब वह अपनी दया के अनुसार हमारे साथ बना रहता है, हमारी ज़रूरतों को पूरा करता है, हमें सिखाता है और हमारी अगुवाई करता है, और हमें वापस उसकी मूल योजनाओं और उद्देश्यों में ले जाता है।

दूसरों के कार्य हमें ज़बरन ऐसे परिस्थितियों में लाते हैं

यूसुफ के विषय में सोचें। उसके भाइयों ने उसे ईर्ष्या की और उसे गुलाम के रूप में बेच दिया। उसके पिता के घर के सुखों को छोड़कर गुलाम बनना यूसुफ के लिए अचानक ही हुई बात थी। यह कल्पना करना ज्यादा मुश्किल नहीं है कि यूसुफ को किस दौर से होकर जाना पड़ा। उस अलग भाषा और संस्कृति से जिसमें उसने खुद को पाया, वह उलझन में पड़ गया होगा। वह सोच रहा होगा कि क्या परमेश्वर इन सारी बातों में है। वह परमेश्वर की बुद्धि पर सवाल कर सकता था जिसने उसे स्वप्न दिए थे, जबकि वास्तव में झूठे आरोपों के कारण उसे बंदीगृह में डाल दिया गया। किसी और के कार्यों का परिणाम यूसुफ की दुर्दशा में हुआ (उत्पत्ति 37)। दाऊद के विषय में सोचें जिसे

इस्राएल का राजा होने के लिए अभिषेक किया गया था, परंतु वह शाऊल की प्रबल ईर्ष्या का शिकार बन गया। दाऊद लगातार भागता फिरा और शाऊल को खुद से बचाने के लिए गुफाओं में छिपा रहा क्योंकि शाऊल उसकी हत्या करना चाहता था (1 शमुएल 22)।

शैतान पूरी शक्ति से हमारे विरोध में आता है

परमेश्वर हमारे जीवन में समयों और ऋतुओं के अनुसार कार्य करता है। यह देखना दिलचस्प है कि शत्रु भी कुछ निश्चित ऋतुओं में हमारे विरोध में औरों की तुलना में बड़ी सामर्थ के साथ चलकर आते हैं। हमारे जीवन में ऐसे समय हो सकते हैं जब हम शत्रु के प्रबल आक्रमणों का सामना करते हैं और ऐसे भी ऋतु होते हैं जब वह पीछे हट जाता है। इफिसियों 6 हमें सलाह देता है कि सब कुछ करने के बाद हम बुरे दिन में दृढ़ खड़े रहें। हमारे जीवनों में ऐसे समय होंगे जब हम बुरे दिन से होकर गुजरते हैं, जब शैतान का आक्रमण अत्यंत प्रबल होता है।

"इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको" (इफिसियों 6:13)।

"जब शैतान सब परीक्षा कर चुका, तब कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया" (लूका 4:13)।

जब हम यीशु के जीवन को देखते हैं, तब हम पाते हैं कि जब वह जंगल में उपवास कर रहा था तब वह शैतान की ओर से भयानक आक्रमण के समय का अनुभव कर रहा था। उसके बाद ऐसा समय आया जब यीशु को अकेले छोड़ दिया गया। शैतान इसी प्रकार काम करता है। हम भी कुछ निश्चित ऋतुओं में से होकर गुज़रते हैं जब हमें भयंकर आक्रमणों का सामना करना पड़ता है और अन्य समयों में ये आक्रमण इतने भयंकर नहीं होते।

इसका उत्तम उदाहरण अय्यूब है। अय्यूब की पुस्तक में, हम देखते हैं कि परमेश्वर शैतान के सामने यह बढ़ाई कर रहा है कि अय्यूब एक धर्मी और परमेश्वर का भय रखने वाला जन है। शैतान ने परमेश्वर को

बताया कि अय्यूब परमेश्वर के प्रति केवल इसलिए विश्वासयोग्य था क्योंकि परमेश्वर ने उसे सुख, स्वास्थ्य और संपन्नता की आशीष दी थी। शैतान ने परमेश्वर को चुनौती दी कि उससे सब कुछ छीन लिया जाए और उसके बाद यह देखें कि क्या अय्यूब उसकी दृष्टि में प्रसन्नतादायक बना रहता है। इसलिए परमेश्वर ने शैतान को यह अनुमति दी कि जो कुछ अय्यूब का है उसे नाश कर दे। अय्यूब के विरोध में आने वाला और उसके परिवार, स्वास्थ्य, और भौतिक संपत्ति को नाश करने वाला शैतान था। परमेश्वर नहीं, परंतु शैतान अय्यूब के क्लेश का कारण था। कुछ लोग मानते हैं कि ऐसा करने वाला परमेश्वर था, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं था।

जब हम अय्यूब की पुस्तक पढ़ते हैं, तब हम जानते हैं कि लेने वाला प्रभु नहीं था परंतु सारी बातों को छीन लेने का काम शैतान ने किया था। परंतु उस समय, अय्यूब के पास यह जानने की आत्मिक समझ नहीं थी कि आत्मिक संसार में वास्तव में क्या हो रहा था। इसीलिए उसने कहा, "प्रभु ने दिया, और प्रभु ने ले लिया है" (अय्यूब 1:21)। अय्यूब अज्ञान के कारण बोला क्योंकि वह नहीं जानता था कि सत्यानाश करने वाला शैतान था। उसे दोष नहीं दिया जा सकता कि उसने मूर्खता से परमेश्वर पर आरोप लगाया। जो कुछ भी अध्याय के आरम्भ से बताया गया है उसके प्रकाश में हमें अय्यूब 1:21,22 को समझने की ज़रूरत है। अय्यूब के पास पूरी जानकारी नहीं थी जो आज हमारे पास है। अय्यूब की पुस्तक बायबल की सबसे पुरानी पुस्तक है और मनुष्य को मूसा की व्यवस्था दी जाने से पहले लिखी गई थी। वह स्पष्ट रूप से अय्यूब के दुख उठाने के बाद लिखी गई। स्पष्ट रूप से जब पुस्तक लिखी जा रही थी, तब अय्यूब की पुस्तक के लेखक ने (अय्यूब, मूसा या कोई और) बाद के समय में जो कुछ आत्मिक संसार में हुआ था उस बात का प्रकाशन पाया। यह समझ सम्भवतः मूसा के पास नहीं थी जब उसने उसके विरोध में शैतान के कार्य का सामना किया। परंतु यह किसी रीति से अय्यूब के धर्मी जीवन, ईमानदारी या परमेश्वर के प्रति समर्पण को कम नहीं करता।

परंतु, आज, हम परमेश्वर की बातों के विषय में बहाना नहीं बना सकते क्योंकि हमारे पास परमेश्वर का पूर्ण वचन है और हमें ऐसा बयान नहीं करना है। अय्यूब के विषय में अद्‌भुत बात यह है कि उसने अपने हृदय को परमेश्वर के प्रति कड़वाहट से भरने नहीं दिया। वस्तुतः, परमेश्वर के प्रति उसका समर्पण परिपूर्ण था (अय्यूब 13:15)। अय्यूब ने जिस प्रकार आनंद के साथ दुख उठाया उसी का अनुकरण करने के लिए हमें बुलाया गया है (याकूब 5:11) और आश्वासन दिया गया है कि अंत में परमेश्वर हमारे लिए भलाई ही को उत्पन्न करेगा। अय्यूब की पुस्तक के अंत में, हम देखते हैं कि जो कुछ भी अय्यूब ने खोया था उसे परमेश्वर ने दोगुना लौटा दिया! परमेश्वर केवल उस समय सब कुछ ले लेता है जब हम जानबूझकर पाप और विद्रोह में चलते हैं, जैसा हम शाऊल के जीवन में देखते हैं। परमेश्वर ने शाऊल को राज्य दिया था। उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। इसलिए शमूएल उसके पास आया और उसने कहा कि परमेश्वर राज्य को ले लेगा और उसे किसी और को दे देगा (1 शमूएल 15:22–28)। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि परमेश्वर किसी से मनमाने ढ़ग से कुछ नहीं लेता। वस्तुतः, परमेश्वर देने वाला परमेश्वर है जिसका स्वभाव उदारतापूर्वक देना है, जैसा कि याकूब 1:5 में देखा जाता है।

रात के समय किस कारण आते हैं

- परमेश्वर ऐसे समयों में हमें मार्ग दिखाता है।
- हम अपनी ही मूर्खता/गलतियों/गलत चुनावों के परिणामस्वरूप ठोकर खाते हैं।
- दूसरों के कार्य हमें ज़बरन ऐसे परिस्थितियों में लाते है।
- शैतान पूरे बल के साथ हमारे विरोध में आता है।

4

रात क्यों आती है

जब मैं अपने जीवन पर मनन करता हूं, तब मैं समझता हूं कि मेरे जीवन में ऐसे समय रहे हैं जिन्हें सचमुच 'रात्रि समय' कहा जा सकता है। जनवरी 1993 और सितम्बर 1996 के बीच का समय, जब मैं अमेरिका में था, अत्यंत संघर्ष का समय था। हाल ही के समय में, दिंसबर 2003 और जनवरी 2004 के बीच का समय था, जब मेरा कारोबार मुश्किल दौर से गुज़र रहा था।। मैंने भी रात्रि समय का अनुभव किया है। जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं और इन पर मनन करता हूं, तो मैं समझने लगता हूं कि परमेश्वर हमारे जीवनों में रात्रि समयों को क्यों आने देता है।

सिखाने और प्रशिक्षण देने का समय

"मैं यहोवा को धन्य कहता हूं, क्योंकि उसने मुझे सम्मति दी है; वरन् मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है" (भजनसंहिता 16:7)।

जीवन के कुछ अनमोल सबक तब सीखे जाते हैं, जब हम मुश्किल समयों से होकर गुज़रते हैं – रात्रि समय या रात्रि काल। जब हम कठिन परिस्थितियों में होते हैं, तब परमेश्वर हमेशा ही चमत्कारपूर्ण रूप से हस्तक्षेप नहीं करता। परमेश्वर चाहता है कि हम कुछ सबक सीखें और वापस वैसे ही परिस्थितियों में फिर न फंसे। जो कुछ सीखना चाहिए वह सीखना और बुद्धिमान बनना हमारे हाथों में है। हम में से कुछ लोग बारम्बार खुद को ऐसी परिस्थितियों में डालते हैं और सोचते हैं कि परमेश्वर हमारी ओर से क्यों कुछ नहीं कर रहा। शायद परमेश्वर हमें बार–बार इन परिस्थितियों से होकर जाने का मौका देता है जब तक कि हम उन बातों को सीख न लें जिन्हें हमें सीखने की ज़रूरत है। जब तक हम उन पाठों को नहीं सीखते जिन्हें परमेश्वर हमें

सिखाने का प्रयास कर रहा है, तब तक हम 'पदवी' नहीं पा सकते या जीवन की अगली ऋतु की ओर आगे नहीं बढ़ सकते।

हम जिन गलतियों को करते उनसे है सीखने का और उचित बदलाव लाने का यह समय है। यह उचित है कि हमें गलती करने का मौका दिया जाए, परंतु उसके बाद हमें इतना समझदार होना चाहिए ताकि हम उन गलतियों को फिर न दोहरा सकें। जब गलती की जाती है, तो हमें उससे सीखने की, आवश्यक सावधानियां बरतने की और उन्हें फिर न दोहराने का प्रयास करने की ज़रूरत होती है। जब हम हमारे जीवन में अंधकारमय समय में प्रवेश करते हैं, तब हमारा रवैय्या निराशा का न हो। ऐसा क्यों हुआ ऐसा सवाल हम परमेश्वर से करना आरम्भ न करें। बल्कि, हम ढूंढ़ निकालें कि मुश्किल परिस्थितियों से कौन–से मूल्यवान सबक सीखे जा सकते है। बाद में जब हमारे जीवन में वैसी ही परिस्थितियों से हमारा सामना होगा, तो हम विजयी बनकर उनमें से बाहर निकलेंगे।

कुछ महत्वपूर्ण आत्मिक अंर्तदृष्टियां जो हम सीखते हैं, उनके विषय में हमें रात्रि ऋतुओं में भी सिखाया जाता है। यीशु ने कहा, "जो मैं तुमसे अन्धियारे में कहता हूं, उसे उजियाले में कहो; और जो कानों–कान सुनते हो, उसे कोठों पर से प्रचार करो" (मत्ती 10:27)। घर की छत पर खड़े रहकर प्रचार करना आरम्भ करने से पहले हमारे जीवनों में ऐसे समय होने चाहिए, जब हम उसकी शांत और धीमी वाणी को सुन सकें। अक्सर हम जीवन की अंधकारमय ऋतुओं में मूल्यवान सबक सीखते हैं। यद्यपि निम्नलिखित वचन वास्तव में रात के समयों का उल्लेख करते हैं, फिर भी यह सच है कि परमेश्वर हमारे जीवन की रात्रि ऋतु में हमसे बात करता है।

"तौभी कोई यह नहीं कहता, कि मेरा सृजनेवाला ईश्वर कहां है, जो रात में भी गीत गंवाता है" (अय्यूब 35:10)।

हमारे जीवनों में जिन गीतों को हम गाते हैं, उनमें से कइयों का जन्म जीवन के रात्रि काल में होता है।

चरित्र निर्माण के लिए समय

जीवन का रात्रि समय चरित्र निर्माण का समय होता है। यह ऐसा समय होता है जब परमेश्वर हमें परिष्कृत करता है और हमें परिपक्व बनाता है।

"तू ने मेरे हृदय को जांचा है; तू ने रात को मेरी देखभाल की, तू ने मुझे परखा परन्तु कुछ भी खोटापन नहीं पाया; मैंने ठान लिया है कि मेरे मुंह से अपराध की बात नहीं निकलेगी" (भजनसंहिता 17:3)।

"परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी चाल चला हूं; और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलूंगा" (अय्यूब 23:10)।

ये वचन मेरे लिए बड़े प्रोत्साहन का कारण रहे हैं। "वह जानता है, कि मैं कैसी चाल चला हूं" ये शब्द सचमुच हमें प्रोत्साहन देने पाएं। चरित्र का निर्माण या विकास कैसे होता है? केवल बाइबल सभाओं में जाने से नहीं! बाइबल हमें सिखाती है कि क्लेश से धीरज उत्पन्न होता है और धीरज चरित्र को जन्म देता है। "केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज; और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है" (रोमियों 5:3,4)। यदि हम क्लेश से होकर नहीं गुज़रते हैं और धीरज प्राप्त नहीं करते हैं, तो हमे मज़बूत चरित्र का आश्वासन नहीं होता।

जिन रात्रि समयों से हम गुज़रते हैं उनमें, परमेश्वर हमारे जीवन की निर्बल बातों को संसाधित करता है और उन्हें बल में परिवर्तित करता है। परमेश्वर जीवन की अंधकारमय ऋतुओं में हमारी नकारात्मक बातों को सकारात्मक बना देता है।

बल प्राप्त करने का समय

सामान्य तौर पर उन अंधकारमय ऋतुओं में हम परमेश्वर से बल पाते हैं। दाऊद जब अपने भेड़ों की रखवाली करता था, तब वह गुमनामी में था। परमेश्वर ने भेड़ों की रखवाली करते समय सिंह और भालू को मारने की सामर्थ दाऊद को दी (1 शमूएल 17:34–37)। इस गुमनामी के समय के दौरान, दाऊद के जीवन के इस रात्रि काल के दौरान, उसने गोलियत का सामना करने हेतु परमेश्वर में भरोसा प्राप्त किया। रात्रि समयों के दौरान जिन अनुभवों से परमेश्वर हमें जाने की अनुमति देता है, वे हमारी उन्नति करते हैं, और उन बातों के लिए हमें तैयार और सुसज्जित करते हैं जो उसने हमारे लिए रखी हैं। यदि दाऊद भेड़ों की देखभाल करना नापसंद करता, तो शायद उसका सामना सिंह और भालू से नहीं होता, और उसे उन पर जय पाने का अवसर न मिलता। परमेश्वर ऐसे समयों में हमारे बल को बढ़ाता है। सामर्थी योद्धा बनने का एकमात्र मार्ग है कुछ लड़ाइयां लढ़ी जाएं। यदि हम लड़ाइयां लढ़ने से इन्कार करते हैं तो हम परमेश्वर के लिए सामर्थी योद्धा नहीं बन सकते। हम यह नहीं कह सकते, "परमेश्वर, शैतान को मेरे निकट मत आने देना" और उसके बाद सामर्थी योद्धा बनने की इच्छा रखें। परमेश्वर की सेना में सेवा करने का प्रभावशाली तरीका होगा कुछ व्यवहारिक अनुभवों को प्राप्त करना। हम लड़ाई के बगैर विजय को कैसे जान सकते हैं? संघर्ष के बिना बल कैसे प्राप्त हो सकता है? बिना परीक्षा के गवाही कैसे हो सकती है? हम लड़ाइयां लढ़ने के लिए इच्छुक हो जाएं, ताकि उनमें से सफलतापूर्वक गुज़रने के बाद, हम उठकर गवाही दे सकें।

नींव ड़ालने का समय

"फिर उसने कहा, 'हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दें, और किस दृष्टान्त से उसका वर्णन करें? वह राई के दाने के समान है, कि जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है। परन्तु जब बोया गया, तो उगकर सब साग–पात से बड़ा हो जाता है

और उसकी ऐसी बड़ी डालियां निकलती है कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं'' (मरकुस 4:30–32)।

बीज ज़मीन में रहते हुए अंकुरित होता है। कुछ बदलाव होते हैं, यद्यपि देखने वाले को वे स्पष्ट दिखाई नहीं देते। हमारे जीवन के रात्रि काल की तुलना अंकुरन के समय से की जा सकती है, जब ऐसा लगता है कि कुछ नहीं हो रहा है। कुछ समय प्रसुप्तावस्था में रहने के बाद, बीज़ का बाहरी आवरण टूट जाता है और वह जड़ और टहनी को जन्म देता है। जकर्याह 4:10 के पहले भाग में लिखा है, "क्योंकि किसने छोटी बातों का दिन तुच्छ जाना है?" हमें कभी छोटे आरम्भ के दिनों को तुच्छ नहीं जानना है। पीछे पलटकर देखने पर, मुझे याद आता है कि इस कलीसिया का आरम्भ 18 फरवरी 2001 में मात्र आठ लोगों से मेरे पिता के घर के बैठक के कमरे में हुआ था। उस समय हमने शायद ही समझा था कि हमारे पास इतने लोगों से भरा हुआ सभागार होगा जो आज हमारे पास है! परमेश्वर के राज्य में, बड़ी बातों का आरम्भ सामान्य तौर पर छोटे आरम्भों से होता है। परंतु, इससे पहले कि हम गुमनामी से कदम निकालकर लोगों के सामने प्रगट हों, हमारे पास अंकुरन समय से होकर जाने के लिए, नींव ड़ालने के समय के लिए धीरज **धरना** चाहिए।

परीक्षा के बगैर कोई गवाही नहीं
लड़ाई के बिना कोई विजय नहीं
संघर्ष के बिना कोई बल नहीं

5

जब सब अंधकारमय होता है तब परमेश्वर कहा होता है?

"सुन, इस्राएल का रक्षक, न ऊंघेगा और न सोएगा" (भजनसंहिता 121:4)।

"दिन तेरा है, रात भर तेरी है; सूर्य और चन्द्रमा को तू ने स्थिर किया है" (भजनसंहिता 74:16)।

"वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है; वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है" (दानिय्येल 2:22)।

"परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक। इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाए" (भजनसंहिता 46:1,2)।

"कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?" (रोमियों 8:35)।

जीवन की रात्रि ऋतुओं में, परमेश्वर लाखों मील दूर प्रतीत होता है और हमारे मन अक्सर सवाल करते हैं, "परमेश्वर कहां है? मुझे उसकी अत्यंत ज़रूरत है?" परमेश्वर का वचन हमारा एकमात्र आश्वासन है। परमेश्वर का वचन हमें आश्वासन देता है कि वह न तो ऊंघता है और न सोता है। परमेश्वर हमारे जीवन में काम करने से अवकाश नहीं लेता!! परमेश्वर अब भी काम करता है। प्रभु के लिए रात और दिन एक समान हैं। उसी ने दोनों को बनाया। जब क्या हो रहा है उसे आप बिल्कुल समझ नहीं पाते, जब आप आपके रात्रि काल से मार्ग तय नहीं कर सकते, तब निश्चित रहें कि अंधकार में क्या है उसे वही जानता है। उसके पास ज्योति है। वह बाहर निकलने का मार्ग जानता है!

परमेश्वर "संकट में सहज से मिलने वाला" है, जिसका अर्थ यह है कि वह आपकी मुश्किल परिस्थिति में आपके साथ उपस्थित है। वह आपके साथ वहां पर है। ऐसी कोई परिस्थिति या हालात नहीं है जो आपको उस प्रेम से अलग करे जो परमेश्वर आपके लिए रखता है। उसका प्रेम आज भी आपके लिए उतना ही प्रबल, उतना ही सच्चा और उतना ही ताकतवर है जितना वह उस दिन था जब उसने अपने एकलौते बेटे को आपके लिए मरने हेतु दिया। आज वह आपसे कम प्रेम नहीं करता!

6

हम बीच रात में क्या करते हैं

जीवन के रात्रि काल से गुज़रते समय हम जिन बातों को कर सकते हैं, उनमें से कुछ यहां है।

अपने हृदयों को परमेश्वर के प्रति समर्पित रखें

अय्यूब ने यह सामर्थी बयान किया : "वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं; तौभी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूंगा" (अय्यूब 13:15अ)। प्रभु के प्रति हमारे समर्पण की यह उत्कटता होनी चाहिए। अय्यूब के साथ जो कुछ हो रहा था, उसके 'क्यों' और 'कब' न समझने पर भी, उसमें यह कहने की शक्ति थी, "परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी चाल चला हूं; और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलूंगा" (अय्यूब 23:10)। भले ही आप हर एक बात न समझते हों, फिर भी प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहें! अपने हृदय को उसके प्रति समर्पित रखें। उससे प्रेम करते रहें, चाहे जो हो। हमारे जीवन की ऋतुएं बदल सकती हैं, परंतु परमेश्वर कभी नहीं बदलता। इसलिए हम प्रभु के प्रति समर्पित रहें।

उसकी प्रशंसा हमारे होठों पर होती रहे

भले ही हम मुश्किल समय से गुज़रते हों, फिर भी हमारे चेहरे पर दुख न दिखाई दे। परमेश्वर आज भी सिंहासन पर है और वह हमारी प्रशंसाओं के योग्य है, भले ही हमें उसकी स्तुति करने की इच्छा हो या न हो। हबक्कूक 3:17,18 कहता है, "क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़–बकरियाँ न रहें, और न थानों में गाय बैल हों, तौभी मैं यहोवा के कारण आनंदित और मगन रहूँगा, और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूँगा।" अब ऐसा करना अत्यंत समर्पण की बात होगी! आनंद का

अंग्रेज़ी अक्षर–विन्यास है जे–ओ–वाय। हम इस कहावत से परिचित होंगे : जे का मतलब है जीज़स, अर्थात् यीशु, वाय का मतलब है यू अर्थात् आप और बीच में ओ का मतलब है 'कुछ भी नहीं'। आनंद यीशु और आप के रिश्ते पर निर्भर होना चाहिए, आपकी परिस्थितियों पर नहीं। आनंद हमारे जीवनों में उस समय भी वास्तविकता हो जब हमारे उद्धारकर्ता के साथ हमारे रिश्ते को छोड़ और कुछ नहीं है।

"मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूंगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी" (भजनसंहिता 34:1)। हमें प्रभु की स्तुति केवल उस समय करने की ज़रूरत नहीं है जब हम अच्छे समयों से जाते हैं, परंतु हर समय करना है। जब हम मुश्किल समयों से होकर गुज़रते हैं, उस समय भी हमें परमेश्वर को धन्य कहना है। हम वचन लें कि जब हम अत्यंत मुश्किल समयों से होकर गुज़रते हैं, उस समय हम परमेश्वर की ज्यादा स्तुति करेंगे।

जो कुछ सीखा था उसके अनुसार जीवन बिताएं

हम वास्तव में कौन हैं, हम किस बात में दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हैं और हम सचमुच किस चीज़ से बने हैं इसकी अग्निपरीक्षा अच्छे और आसान ऋतुओं में नहीं होती, परंतु जीवन के कठिन और मुश्किल समयों में होती हैं। आग ही है जो परखती और साबित करती है कि हम सचमुच किससे बने हैं। सब कुछ अच्छा रहते हुए "हालेलुय्याह" और "प्रभु की स्तुति हो" कहना ज्यादा मुश्किल नहीं है। यह देखना दिलचस्प होगा कि जब हम मुश्किल परिस्थिति में रहते हैं, तब हमारे मुंह से कौन–से शब्द निकलते हैं। हम मात्र वचन को सुनने वाले नहीं परंतु करने वाले भी बने, जैसे याकूब 1:22 बताता है। जो कुछ हमने सीखा है उसके अनुसार जीवन बिताने हेतु यहां कुछ व्यवहारिक सुझाव दिए गए हैं।

अपने विश्वास और अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें

"और अपने आशा के अंगिकार को दृढ़ता से थामे रहें; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है वह सच्चा है" (इब्रानियों 10:23)।

दृढ़ता से थामे रहें! वह विश्वासयोग्य है! यू एस ए, जाने से पहले, मैं भारत में लोगों को विश्वास, परमेश्वर की भलाई और चंगाई करने हेतु उसकी इच्छा और योग्यता के विषय में सिखाता था। मैं विश्वास में लोगों की सेवा भी करता था। यू एस ए पहुंचने के तुरंत बाद ही, मैंने जान लिया कि वह ऐसा देश नहीं था जहां दूध और मधु बहता हो जैसे कि मैं कल्पना करता था! बल्कि, मैंने मेरे जीवन के ऐसे पक्ष में प्रवेश किया जो मेरे जीवन के अत्यंत अंधकारमय समयों में से एक होना था। ऐसा भी समय रहा जब मेरे पास भोजन खरीदने और खाने के लिए पैसा नहीं था। परंतु, जीवन के उस समय के दौरान, मैंने अपने अनुभव के अनुसार अपने ईश्वरविज्ञान को नहीं बदला। वस्तुतः, उस समय मैंने परमेश्वर के वचन को और दृढ़तापूर्वक थाम लिया। मैं उस समय भी विश्वास करता था कि यहोवा मेरा चरवाहा है और मुझे कोई घटी न होगी। मैं उस समय भी विश्वास करता था कि मेरा परमेश्वर उसके महिमा के धन के अनुसार मेरी सारी ज़रूरतो को पूरा करेगा। मैंने उस समय भी यह विश्वास करने का चुनाव किया कि जो कुछ मैं करूंगा वह सफल होगा। मेरी परिस्थितियां बुरी होगी, परंतु पवित्र शास्त्र के वचन सत्य हैं। इसलिए मैं परमेश्वर के वचन को थामे रहा और मैंने कहा, "मैं विश्वास करता हूं कि यह परमेश्वर का वचन है और वह पूरा होगा।"

जब मैंने परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना ज़ारी रखा, तब मैं अपने जीवनों में कई बातों को होते देखने लगा और परमेश्वर मुझे धीरे–धीरे उठाने लगा। उस समय भी जब जीवन में मेरे पास कुछ नहीं था। मैं कल्पना किया करता था कि मैं भारत देश आ रहा हूं और मैं ऐसी मज़बूत कलीसियाओं की स्थापना कर रहा हूं जो राष्ट्रों को प्रभावित करेगी। केवल एक ही बात जिसने अंतर लाया वह था परमेश्वर का वचन। इसलिए, यदि आज कोई विश्वास के सम्बंध में सिखाने के विषय में किसी प्रकार संदेह करता है और सवाल करता है कि क्या सचमुच परमेश्वर में विश्वास कार्य करता है, तब मैं उत्तर दूंगा, "अवश्य"। मेरे जीवन में मैंने इन सिद्धातों के अनुसार जीवन बिताया है। वह सच

साबित हुआ है। ऐसा नहीं है कि मैंने इन सिद्धांतों को सैद्धांतिक तौर पर बाइबल कॉलेज में सीखा है या किसी पुस्तक को पढ़कर सीखा है। मैंने मेरे जीवन में उनके अनुसार जीवन बिताया है। यदि कोई मुझसे सवाल करता है कि मैं क्यों संपन्नता के विषय में सिखाता हूं और मुझे अन्यथा समझाने की कोशिश करता है, तो मैं उसकी बातों को नहीं मानूंगा। मैंने 'प्रयोजन' के क्षेत्र में उसके वचन के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को अनुभव किया है। उसका वचन सत्य है। जब आप रात्रि काल से होकर गुज़रते हैं, तो आपको यही करना है – आपके विश्वास के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें।

विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़

"विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को घर ले, जिसके लिए तू बुलाया गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था" (1 तीमुथियुस 6:12)।

विश्वास की चाल को 'लड़ाई' कहा गया है। हमें बताया गया है कि हमें विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ना है। यदि हम लड़ाई में हैं, तो यह स्पष्ट है कि हमारे शत्रु होंगे जिनके हम विरोध में खड़े हैं। हम अच्छी लड़ाई में हैं – ऐसी लड़ाई जिसे लड़ना उचित है। इसलिए हम बीच लड़ाई में मैदान छोड़कर नहीं भागते – भले ही युद्ध घमासान हो। विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ते रहें।

अपने हृदयों की रक्षा करें

हम बुरी भावनाओं से अपने हृदयों की रक्षा करें। इन्हीं समयों में हमारे मनों में परमेश्वर के प्रति और अन्य लोगों के प्रति बुरी भावनाएं बढ़ने लगती हैं। हम परमेश्वर से, अपने पासबान से, पड़ोसियों से और अपने आप से भी क्रोधित हो सकते हैं। हमारे मन में कड़वाहट की भावनाएं आ सकती हैं। यदि हम पवित्र शास्त्र की चेतावनी की ओर नज़रअंदाज़ करते हैं और बुरी भावनाओं को हमारे दिल में आने की अनुमति देते हैं, तो इसका हम पर ही सबसे अधिक असर होगा। "सब से अधिक अपने

मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है" (नीतिवचन 4:23)। हमारे हृदयों में जो कुछ है उसके द्वारा हमारा जीवन निर्धारित होगा; इसलिए हमें अपने हृदयों की रक्षा करने की ज़रूरत है। यूसुफ को उसके भाइयों ने मिस्र देश में गुलाम के रूप में भेज दिया था और उनके पिता की मृत्यु के बाद, उसके भाइयों को डर था कि उनके पिछले कामों के विषय में यूसुफ की प्रतिक्रिया क्या होगी। यूसुफ ने उन्हें पूर्ण रूप से क्षमा की थी और उसके भाइयों के प्रति उसके मन में कोई दुर्भावना नहीं थी क्योंकि वह बड़ी तस्वीर देख पा रहा था।

"यूसुफ ने उनसे कहा, मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूं? यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार **किया था; परंतु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं"** (उत्पत्ति 50:19,20)।

धीरज को बढ़ाएं

"मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी। उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है। और उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे" (भजनसंहिता 40:1–3)।

जीवन के संघर्षों से जाते समय धीरज अपनाएं। जब मैं मुश्किल दौर से जा रहा था, तब भजन 40:1–3 ने मुझे आवश्यक बल और प्रोत्साहन दिया। मैं जानता था कि मैं गड़हे में से बाहर निकलूंगा। यद्यपि मैं नहीं जानता था कि कब, परंतु मुझे यकीन था कि परमेश्वर मुझे उठाएगा। कभी कभी ऐसा समय होता जब यह कल्पना करते हुए कि परमेश्वर मुझ से क्या करवाना चाहता है और क्या चाहता है कि मैं बनूं, मैं अंधकार की ऋतु से होकर गुज़रता, भले ही उस समय कुछ नहीं था। मेरे आगे जो आनंद धरा था उसे जानते हुए मैंने मुश्किल परिस्थितियों को सह लिया।

"हे भाइयो, जिन भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें की, उन्हें दुख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो। देखो, हम धीरज धरनेवालों को धन्य कहते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है" (याकूब 5:10,11)।

"और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा" (इब्रानियों 12:2)।

उन भविष्यद्वक्ताओं के धीरज को देखें जैसा कि याकूब की पत्री में बताया गया है। अय्यूब के विषय में सोचें जो इन सारी मुश्किलों में धीरजवंत था। आपको मात्र धीरज के साथ दृढ़ बने रहना है। यीशु ने उस आनंद को देखा जो उसके आगे रखा था और क्रूस को सह लिया। उस दर्शन को सम्हालकर रखें जो परमेश्वर ने आपको दिया है। जब सबकुछ असम्भव लगता है, तब उस दर्शन को नया बनाए और सजीव करें जो परमेश्वर ने आपको दिया है। उस दर्शन को पूरा होते हुए देखने का विचार, हर समय रात्रि काल की ऋतुओं में **आपको** आगे बढ़ाता चले।

हमें हमेशा सारे उत्तर नहीं मिलेंगे

"गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश में रहेगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएं" (व्यवस्थाविवरण 29:29)।

हममें से कई लोगों की यह प्रवृत्ति होती है कि वे उन्हीं प्रश्नों पर लगे रहते हैं जिनके उत्तर हमें स्वर्ग के इस छोर पर कभी नहीं मिलेंगे। परमेश्वर हमारे सारे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं है। जो कुछ हमें जानने की ज़रूरत है वह सब कुछ उसने अपने वचनों में दिया है। जीवन के रात्रि काल के दौरान, ऐसे कई प्रश्न हो सकते हैं जो हम

पूछ सकते हैं – उनमें से कई अनुत्तरित रह जाते हैं। परंतु, अनुत्तरित प्रश्न आपको जीवन में रुकावट न लाने पाएं। उसके साथ आगे बढ़ें! जब आप स्वर्ग जाएंगे, तब आपको आपके उत्तर मिल जाएंगे। इस समय आपकी दौड़ पूरी होने तक दौड़ते रहें। ऐसा समय होता है जब आपको यह पूछना बंद करने की ज़रूरत है कि "क्यों?" और केवल परमेश्वर की योजना के साथ आगे बढ़ना है!

परमेश्वर की बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। काम करते रहें

"इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है" (1 कुरिन्थियों 15:58)।

"कि तू वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा" (2 तीमुथियुस 4:2)।

केवल इसलिए कि हम रात्रि काल से या जीवन में मुश्किल समय से होकर गुज़र रहे हैं, इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें हमारे जीवनों पर परमेश्वर की बुलाहट से पूर्णतया पीछे हट जाना है। हममें से कुछ लोगों को परमेश्वर की सेवा करने की केवल उस समय आदत होती है जब सब कुछ आसान होता है। जब जीवन में मुश्किल बढ़ जाती है, तब हम सेवकाई में सहभागी होने से पीछे हट जाते हैं और अपने आपमें सिमटकर रह जाते हैं। हम दूसरों की परवाह नहीं करते। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे जीवनों पर परमेश्वर की बुलाहट 'स्वर्गीय बुलाहट' के प्रति 'हृदय की प्रतिक्रिया' के बजाय, परिस्थितियों पर अधिक निर्भर होती है। बल्कि, आप चाहे जीवन की जिस ऋतु में हों, परमेश्वर की बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। आप चाहे जीवन की जिस ऋतु में हों, वही करें जो परमेश्वर आपसे चाहता है। 'यो–यो' मसीही न बनें, कभी ऊपर और कभी नीचे। संयम या आत्म–संयमन है – परिस्थितियों या हालातों के बावजूद स्थिर बने रहने की योग्यता।

सबक सीखें। आवश्यक बदलाव लाएं। बुद्धिमान बनें

कुछ निश्चित पाठों को सीखे की ज़रूरत है, हमारे जीवनों में कुछ निश्चित बदलावों को लाने की ज़रूरत है – हमारा चरित्र, आचरण और जिस तरह हम खुद व्यवहार करते हैं। जब तक हम इन बातों को नहीं सीखेंगे और बदलावों को नहीं लाएंगे – जब तक हम परिपक्व नहीं होंगे और परिपक्वता के स्तर पर नहीं आएंगे – तब तक हमारी ऋतु नहीं बदलेगी।

हमें बीच रात में क्या करने की ज़रूरत है

- प्रभु के प्रति अपने हृदयों को समर्पित रखें
- अपने होठों पर उसकी स्तुति बनाए रखें
- जो कुछ हमने सीखा है, उसके अनुसार जीवन बिताएं।
  - अपने विश्वास और अंगिकार को दृढ़ता के साथ थामे रहें।
  - विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ें।
  - अपने हृदय की रक्षा करें।
  - धीरज को अपनाएं।
- हमें हमेशा ही सभी उत्तर नहीं मिलेंगे।
- परमेश्वर की बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। काम करते रहें।
- सबक सीखें। आवश्यक बदलाव लाएं।
- बुद्धिमान बनें।

7

मेरी सुबह का कब उदय होगा?

हममें से अधिकतर लोगों को यह जानने में कठिनाई नहीं होती कि हम रात्रि की ऋतु में हैं, परंतु हम अक्सर यह सवाल करने की प्रवृत्ति रखते हैं कि सुबह कब होगी। हम उत्सुक होते हैं कि भोर या सुबह को जल्दी लाने के लिए क्या किया जाए। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि जिस तरह हम समय को देखते हैं, उस तरह परमेश्वर नहीं देखता। सामान्य तौर पर हम चाहते हैं कि परमेश्वर हस्तक्षेप करे और हमारे विलाप को तुरंत नृत्य में बदल दे। परंतु समय के विषय में परमेश्वर की समझ हमारी समझ से भिन्न होती है।

"हे प्रियो, यह एक बात तुमसे छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं" (2 पतरस 3:8)।

"क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं जैसा कल का दिन जो बीत गया, वा रात का एक पहर" (भजनसंहिता 90:4)।

परमेश्वर तब तक रुका रहेगा जब तक कि हम आवश्यक बदलाव नहीं लाते

"जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहनेवालों का जूआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, और, सब जूओं को टुकड़े टुकड़े कर देना? क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बांट देना, अनाथ और मारे–मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना? तब तेरा प्रकाश पौ फटने की नाईं चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तू दोहाई देगा और वह कहेगा, मैं यहां हूं। यदि तू अन्धेर करना और उंगली मटकाना, और, दुष्ट बातें बोलना छोड़ दे,

उदारता से भूखे की सहायता करे और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे, तब अन्धियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अन्धकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा। और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता" (यशयाह 58:6–11)।

जब हम हमारे जीवनों में आवश्यक बदलाव लाने के विषय में हठीले और अनिच्छुक होते हैं, तब रात्रि की ऋतु और लम्बी हो जाती है, तथा भोर के आने में विलंब हो जाता है।

पवित्र शास्त्र के उपर्युक्त परिच्छेद में, "तब" यह शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है। "तब तेरा प्रकाश भोर की नाई चमकेगा।" कब? जब व्यक्ति उस बात को पूरा करता है जो परमेश्वर उससे चाहता है। दुष्टता छोड़ दें, जुल्म करना छोड़ दें, भूखों को खिलाएं और ज़रूरतमंदों की देखभाल करें और जिन्हें ज़रूरत है उनसे मुंह न छिपाएं।

जैसा कि हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं, "कैरोस" या समय की पूर्णता उन बातों का एक साथ आना है जिनकी परमेश्वर व्यक्ति के जीवन में और उस व्यक्ति के आसपास की परिस्थितियों में इच्छा रखता है। जिन बातों ने हमें घेर रखा है उन्हें परमेश्वर आसानी से पंक्तिबद्ध कर सकता है (लोग, स्थान और हमारे आसपास की वस्तुएं)। वह तब तक इंतज़ार करता है जब तक कि हमारे अंदर की बातें (हमारे हृदय की प्रवृत्तियां, हमारा चरित्र, लोगों के साथ हमारे रिश्ते, और इसके जैसी बातें) जो वह चाहता है उससे पंक्तिबद्ध न हों। जितनी जल्द हम बदल जाएं और उसकी इच्छा, योजना और उद्देश्य के अनुरूप हों, उतनी जल्द जीवन की अगली ऋतु में हम स्थानांतर कर सकते हैं।

जिस तरह से आपने प्रवेश किया वही निर्धारित करेगा कि आप किस तरह से बाहर निकलेंगे

- यदि परमेश्वर ने आपको लाया है, तो परमेश्वर ही आपको बाहर निकालेगा।

- यदि आपने अपनी मूर्खता के कारण प्रवेश किया है, तो उसमें से बाहर निकलने से पहले आपको कुछ बदलाव लाने होंगे और अपने सबक सीखने होंगे। आपकी मूर्खता को बदल दें।
- यदि लोगों ने आपको उसमें ढकेला है, तो आपको बाहर निकालने के लिए परमेश्वर लोगों का उपयोग करेगा! यूसुफ के उदाहरण के विषय में सोचें जिसे पोटीफर की पत्नी ने कैदखाने में ढकेल दिया था। परमेश्वर ने उसे बाहर निकालने के लिए रसोइये का उपयोग किया।
- यदि शत्रु आपके विरोध में बड़ी ताकत के साथ आया है और आप अपने स्थान पर डटे रहते हैं, तो वही शत्रु आपसे दूर भागेगा।

आनंदित हों

मैं परमेश्वर के इन अद्‌भुत वचनों के साथ समाप्त करना चाहता हूं जो हमारी रात्रि की ऋतुओं में हमें आशा प्रदान करते हैं। ये वचन उस समय मेरे लिए बड़े प्रोत्साहन का कारण बने जब मैं मेरी रात्रि की ऋतुओं से होकर जा रहा था।

"और यूसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहकर मनश्शे रखा, कि परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है। और दूसरे का नाम उसने यह कहकर एप्रैम रखा, कि मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है" (उत्पत्ति 41:51,52)।

यूसुफ के प्रधानमंत्री बनने के बाद, उसे दो पुत्र हुए। पहले का नाम था मनश्शे और दूसरे का, एप्रैम। यूसुफ ने अपने जीवन में जो कुछ सहा उसके प्रकाश में दोनों के नामों का अर्थ महत्वपूर्ण है। जिस देश में आपने दुख उठाया होगा वहां परमेश्वर आपको बलवंत बना सकता है (उत्पत्ति 41:51,52)। आमेन! परमेश्वर इसी तरह से काम करता है। आप मुश्किल समय से गुज़र रहे होंगे और चिंतित होंगे कि जो कुछ आप सह रहे हैं उसके परिणामस्वरूप आपके हृदय में भावनात्मक घाव

हो सकते हैं। प्रोत्साहित हों कि बाइबल का परमेश्वर आपके संघर्षों की यादों को भी मिटा देने की प्रतिज्ञा करता है। क्या यह अद्‌भुत नहीं है! हम अद्‌भुत परमेश्वर की सेवा करते हैं। आज, जब मैं पलटकर मुश्किल समयों की ओर देखता हूं जिन्हें मैंने सहा, तो मैं उन पाठों के लिए जो मैंने सीखे और उन मूल्यवान सच्चाइयों के लिए जो उसने मेरे साथ बांटी, परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं। "शुद्ध करने वाले की आग" और "प्रत्येक उद्‌देश्य के लिए समय" जैसी पुस्तकों में से कुछ जो मैं लिख पाया, उन पाठों के परिणाम थे जो मैंने मेरे जीवन में मुश्किल समय से गुज़रते हुए सीखे थे।

"क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का होता हैं, परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है। कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सबेरे आनन्द पहुंचेगा" (भजनसंहिता 30:5)।

"तू ने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला; तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनन्द का पटुका बान्धा है, ताकि मेरी आत्मा तेरा भजन गाती रहे और कभी चुप न हो । हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं सर्वदा तेरा धन्यवाद करता रहूंगा" (भजनसंहिता 30:11,12)।

"तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा; क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का ठहराया हुआ समय आ पहुंचा है" (भजनसंहिता 102:13)।

सुबह अवश्य ही आएगी! हो सकता है कि हमें रात में रोना पड़े, परंतु हम सुनिश्चित रहें कि भोर होगी (भजनसंहिता 30:5)। हमारे विलाप और नृत्य को बदलने हेतु परमेश्वर योग्य है, और इच्छुक भी है। वह हमारे शोक वस्त्रों को बदल देगा और हमें आनन्द का पहरावा पहनाएगा (भजनसंहिता 30:11,12)। परमेश्वर ऐसा करने की योग्यता रखता है। उसके वचन में विश्वास रखें। जब आपके जीवन में 'निर्धारित समय' आएगा, तब परमेश्वर अवश्य कृपा दिखाएगा। परंतु वह समय आने तक, हमें इतज़ार करने के लिए बुलाया गया है और हमें आशा नहीं खोना है। यह सोचकर मुश्किल परिस्थिति से भागने की गलती न करें कि और कहीं उजियाला होगा। परमेश्वर के समय

के लिए रुकें और परमेश्वर के आगे न दौड़े। अपना सबक जल्द ही सीखें और परमेश्वर की कृपा को मौका दें कि वह आप तक पहुंचे। आप पर कृपा करने का समय आएगा।

प्रोत्साहित हों कि बाइबल का परमेश्वर आपके संघर्षों की यादों को भी मिटा देने की प्रतिज्ञा करता है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से ''ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर'' के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 0057213809
IFSC Code: CITI0000004
Bank: Citibank N.A., No. 5, M.G. Road, Bengaluru, Karnataka 560001

कृपया ध्यान दें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफसीआरए परमिट नहीं है और इस कारण केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार किए जा सकते हैं। अपना दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

ऑल पीपल्स चर्च के विनामूल्य प्रकाशन

A Church in Revival*
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks*
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise*
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change*
Code Of Honor
Divine Favor*
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling*
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God*
God is a Good God
God's Word
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife*
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses - Don't take them
Open Heavens*
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh!!! No Gossip
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment*
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power*
The Wonderful Benefits of speaking in Tongues
The Father's Love
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different*
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work - Its Original Design

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पीडीएफ संस्करण विनामूल्य डाऊनलोड के लिए हमारी कलीसिया के वेबसाईट **apcwo.org/publications** पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की आपकी विनामूल्य मुद्रित प्रति प्राप्त करने हेतु, **bookrequest@apcwo.org** पर ई-मेल भेजें। *केवल पी डी एफ के रूप में उपलब्ध
वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **(apcwo.org/sermons)** को भेंट दें।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मो और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4, 5; इब्रानियों 2:3, 4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें : **www.apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें : contact@apcwo.org

क्या आप उस परमेश्वर को जानत हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निश्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, **क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग

दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया - आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है - जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रे.काम 10:43)।

कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपन शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

नोट्स

नोट्स

नोट्स

विनामूल्य ऐप डाऊनलोड करें

ऐप में या गुगल प्ले स्टोर में
"ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" ढूंढ़ें।

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

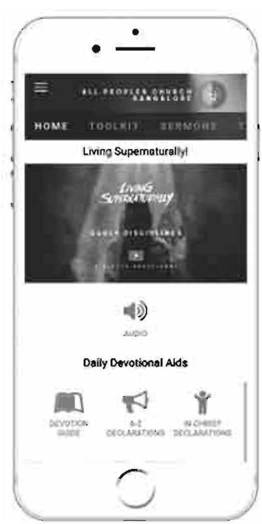

प्रतिदिन 5 मिनिट की वीडिओ के माध्यम से आराधना
प्रतिदिन बाइबल वाचन और प्रेयर गाईड
5 मिनिटों का उपदेश का सारांश
विश्व में उन्नति के लिए विभिन्न विषयों पर पवित्र शास्त्र की टूल किट तथा सुसमाचार सुनाने हेतु जानकारी
उपदेश, उपदेश की टिप्पणियों, टी. वी. कार्यक्रम, पुस्तकें, संगीत, और बहुत कुछ।

यदि यह आपको पसंद आता है, तो दूसरों को बताएं।